आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:20/01/2023; Published:31/01/2023

कहानी

नया जन्म

डॉ. नागरत्ना एन. राव

मूल: नेमीचन्द्र

तीन वर्ष बीत गए ,कितने दिनों बाद मै राजी के घर गयी थी। उसकी शादी के दिन ही उससे मिली थी। बेंगलूर के व्यस्त जीवन में मुश्किल से' कभी कबार ही मिलना हो पाता था। कालेज के दिनों में हम सदा साथ रहे। कालेज की पत्रिका के लिए मैं चित्र बनाती तो राजी कहानी लिखती। उसी अपनेपन की उम्मीद से मैं उसके यहाँ गयी थी लेकिन इन तीन सालो में मेरे और राजी के बीच एक दीवार खड़ी हो गयी।

"तुम्हे पता नहीं, हमारा रवि केवल छह महीनो में ही बोलने लग गया।आठ महीनो में वह चलने लग गया था। मुझे तो कभी अजीब सा डर लगता है। यह बहुत ही बुद्धिमान है ,सब कुछ बड़ी जल्दी ही सीख जाता है। उधर देखो उधर , वो कैसे उस खिड़की पर चढ़ने का प्रयत्न कर रहा है___"

राजी एक ही साँस में सब बोल गयी। मैं मन ही मन बड़बड़ाती रही कि ये लड़किया माँ बनते ही क्यों इतनी एक्साइट हो जाती है? मैं उसकी बातो से मन ही मन ऊब रही थी पर फिर भी बड़ी श्रद्धा से " ओ हां हां " कहती रही।

"कुछ भी बोलो बहुत जल्दी समझ जाता है यह - अरे देखो बेटा, आंटी को नमस्ते करो। " जो बच्चा अपने आप डिब्बों से खेल रहा था उसे ज़बरदस्ती पुचकार कर वह उठा लायी। वह बच्चा बिना आसक्ति के उसकी पकड़ से निकलकर नीचे उतरा और डिब्बे को चम्मच से ठोकने लगा।

"उसका मन होना चाहिए --- अभी से वह "ए बी सी डी " सब सीख गया है " वह रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी इसलिए बीच में ही उसकी बात काटकर मैंने पूछा -" वो सब ठीक है, क्या तुमने हाल ही में कुछ लिखा है." अरे ! एक मिनट भी खाली नहीं रहता। जब यह बड़ा होगा तब ही ----

"अरे! तुम्हारी सास और ननद भी है न रे ----?"

" ओह ,मैं इसे हमेशा अपनी आँखों के सामने देखना चाहती हूँ शशि?"

इसे छोड़कर लिखने का मन ही नहीं करता ,मुझे इस बात का सदा आतंक रहता है कि गिरकर कही चोट न कर ले। देखो , यह नटखट कैसे हंस रहा है। इसे देखकर क्या और क्यों लिखना लगता है ? फिर बेटे को लेकर पुचकारने लगी। उसके चेहरे पर छलकती अपार संतुष्टि और तृप्ति को मैं देखती रह गयी। क्या मातृत्व दुनिया को भुला देती है ? ये स्त्रियां मातृत्व से क्यों इतना सटी रहती हैं ? कोई भी पुरुष पितृत्व को इतना तूल नहीं देता होगा ?मेरे मन में तो कभी इतनी आसक्ति नहीं पनपी। मेरे बच्चा चाहने पर भी मैंने कभी इतनी आतुरता नहीं दिखाई।

उस दिन घर आकर मेरी कुंची ने कैनवास पर बहुत सारे छोटे -छोटे बच्चों को बनाया। मेरी बहन का बच्चा ,इनकी दीदी का बच्चा ----कितने बच्चों को मैं देखने गयी ? अभी -अभी जन्मे कच्चे तन के गंजे सिरवाले लाल -लाल बच्चे !

लेकिन कुंची को हाथ में लिए अभी केवल छह महीने ही हुए हैं। मैं चाहे कुछ भी बनाऊं पर अंत में कैनवास पर तो कई बच्चो के चेहरे उभरते नज़र आते पर मन खाली - खाली।

उनमें से एक - एक चित्र को अपने ख्यालों की दुनिया से चुन -चुनकर बाहर निकलने लगी।

तीन साल पहले =====

घर के अंदर घर घुसेड़ने जैसे घरों का झुण्ड था बैंगलोर में। पड़ोस के दो लड़के हमारे घर की खिड़की की दीवार पर चढ़ते -उतरते। मैंने कई बार उन्हें बताया ,डराया और बाद में जोर से धमकाया भी। दिन भर घर पर रहने वाली मैं घर में दो मिनट भी शान्ति से सो नहीं पाती। चित्र भी नहीं बना सकती। गर्मी की छुट्टियों में ये लड़के गली-मोहल्लों या मैदान में क्यों नहीं खेलते ?इस छोटे से घर में एक दूसरा कमरा भी नहीं। सामने वाले घर की औरत तो झगड़े पर ही उतर आयी - "अरे ! बच्चे शोर नहीं मचाएंगे तो क्या हम मचाएंगे ?"

"इधर देखो ! खिड़की के पास शोर न मचाएं , काम से काम एक मिनट तो शान्ति हो। सो भी नहीं पाते। काम भी नहीं हो पाता। मोहल्ले में जाकर खेलने बताएं। "

" छोटे बच्चों को मोहल्ले में नहीं छोड़ा जाता। बच्चों के खेल को देखकर खुश होना चाहिए वो छोड़कर ----" पड़ोस की औरत बड़बड़ाने लगी।

" उन बेचारों को बच्चों के शोर का पता नहीं --"उस घर की बच्चों वाली माँ जिसने तीन बच्चों को जना है ,इस बात के अभिमान से बहस करती है। धीरे -धीरे बहस जोर पकड़ता है फिर एक सन्नाटा चा जाता है।

" मैं कहती हूँ जिनके यहाँ बच्चे नहीं हैं उन्हें तो बच्चों के लिए जान छिड़कना चाहिए। क्या कोई इस तरह चिल्लाता---- है ? "

" तभी उनके बच्चे नहीं ---" बैंगलोर की इन गलियों में हम चाहे या न चाहें हमारी हर बात दीवार के उस पार पहुँच ही जाती है।

अब जयनगर के इस फ्लैट में बड़ी शान्ति से रह रही हूँ। यहाँ आस -पास किसी भी प्रकार का शोर -शराबा नहीं। खिड़की खोलने पर खुला आकाश दिखाई देता है। फिर भी बार -बार मेरे कानों को उस शोर वाली आवाज़े सुनाई देती हैं। जब में उठती -बैठती हूँ तो बालकनी में दूर -दूर तक क्षितिज दिखाई देता है , रात में चमकते सितारे नज़र आते हैं ,जब में उसकी छाती से सटकर बैठती हूँ तो ---" उन लोगों को बच्चों के शोर का महत्त्व पता नहीं ---" ओह फोह ,कितना अभिमान था उस आवाज़ में , जनन का अभिमान !

वैसे देखा जाए तो उस समय हमारी शादी को हुए चार साल ही हुए थे। मुझे कभी लगा ही नहीं कि हमें बच्चा चाहिए। रमेश तो दिन के चौदह घंटे अपने काम से बंधे रहते .फिर एक के बाद एक मेरा कला प्रदर्शन भी जारी रहा। मैं दिन रात रंगों की दुनिया में विचरण करती। स्फूर्ति से भरी मेरी कुंची, वे प्रदर्शनियां , पत्रिकाएं ,प्रशंसा ,विमर्श --इस व्यस्त दिनचर्या में कभी बच्चे की कमी खली ही नहीं ? मुझसे तीन साल छोटी में मौसी की बेटी विजि ने भी इस सन्दर्भ में मुझे उपदेश देना नहीं छोड़ा था न !

" ये बेकार की पेंटिंग , प्रदर्शन आदि में और कितने दिन टालती रहोगी ?"

" मुझे अभी तक बच्चे की ललक नहीं हुई। फ़िलहाल तोजीवन भरपूर है। तुम डरो नहीं। तीस की होने से पहले मैं एक बच्चे को जन्म दे दूंगी –"कहकर में हंस पड़ी।

" जल्दी से एक कर लो। इतनी देरी ठीक नहीं। बच्चो के बिना सब बंजर है। मातृत्व से बढ़कर कुछ नहीं। शादी के एक -दो वर्ष में ही हो जाए तो बहुत अच्छा --"

विजि की शादी के साढ़े नौ महीने में ही रश्मि का जन्म हो गया था। शादी के बाद जितने उत्साह से विजि अपने पति के घर गयी ,तब ही उसकी माहवारी रुक गयी। इससे पहले कि वह कोई सावधानी बरत पाती तब तक रश्मि अवतरित हो चुकी थी। अभी वह सिर्फ बीस की थी ,नाचने -खेलने की उम्र में वह गर्भावस्था में ऐसे बंधी कि छटपटाने लगी। " अभी से किसको चाहिए था यह बंधन। एक वर्ष भी आराम से नहीं रह पायी। " ऐसे बड़बड़ाते हुए ही उसने अपनी गर्भावस्था को झेला। जब बच्चा हुआ तो उसका लाल-लाल मुलायम शरीर ,उसके मस्तक और कन्धों पर बहुत सारे बाल ,लकड़ी जैसे पतले हाथ ,पपड़ी निकलती देह , बैंडेज से बंधी नाभि ---ने उसमें ममता नहीं जगाई। दो - तीन महीनों में बच्चा गोल -मटोल हो गया तब सहज ही उसमे ममता उभरने लगी। पर जब वह बच्चे को दूध पिलाती तो उसे पचाने के लिए उसका पेट सहलाती तो बच्चे के मुँह से दूध निकलता तो उसे धोना ,साफ़ करना इन सब में जैसे उसका जीवन बांध -सा गया। कौन है जो ऐसे मातृत्व की मर -मर कर अपेक्षा करता है। जब से उसकी माँ का दूध छूटा तब से उसका

पालन -पोषण मौसी के घर पर ही हुआ। विजि ने बच्चे को आकस्मिक ही ढोया ,अनिवार्य रूप से दूध पिलाया और समय के साथ इन सबका आदर्शीकरण और अभिमान करने लगी। वैसे तुमने कब तय किया कि अब बच्चा चाहिए ?

उस समय मेरी छोटी बहन तीसरे बच्चे के लिए घर आयी थी। उसी समय माँ बिलखती हुई बोलीं -" मैं तेरे बच्चे को एक देखकर अपनी आँखें मूँद लूंगी —-" तब मुझे बुरा लगा। मेरी सास ने भी यही बात कितनी बार कही। अंत में इनकी दीदी का वो पत्र - "बच्चे नहीं तो जीवन का कोई अर्थ नहीं। तुम दोनों किसके लिए इतना कमाते हो ?क्यों नहीं शशि को किसी अच्छे डॉक्टर को दिखा देते ? हो सकता है कहीं कुछ कमी हो ?"

"जल्दी से यह बात दिल को लगी जैसे कोई धारदार काँटा ?"

उस दिन मैंने रमेश से कहा था - " अब एक बच्चा कर लेते हैं --"

" तुम्हारी बॉम्बे की प्रदर्शनी ख़त्म होने दो शशि ,आर्ट गैलरी का बुक भी बना चुके --"

" मुझे अब किसी प्रदर्शनी में रूचि नहीं ---"

" ये क्या अचानक -" ऐसा कहते ही मेरे हाथ में दीदी के पत्र को देख वे हंस पड़े । "

" ओह , अब तुम में सब सही है साबित करने का उत्साह ?"

उसने मुझसे इस उत्तर की निरीक्षा नहीं की थी ,बस मुँह बनाकर चली गयी। रिश्तेदारों में कानाफूसी होने लगी।

उस दिन श्यामलाल की पार्टी में भी कुछ ऐसी ही घटना घटी। उनकी पत्नी शीला जो सिर से तक सजी थी और इधर -उधर दौड़ रही थी उससे मेरा परिचय कराते हुए कहा -"ये हैं श्रीमती शशि ,बहुत ही बड़ी कलाकार —" इधर -उधर की बातें चलती रही फिर बीच में ही मैंने कहा -"आपकी हॉबी क्या है ?"

" कुछ नहीं ,खाना -पीना और सोना --"

फिर उसका पति उसका मज़ाक उड़ाते हुए बोला। एक पल के लिए उसे अपमान लगा लेकिन दुसरे ही पल वह अपने इस खालीपन का समर्थन करती नज़र आयी। "कॉलेज में मैं डांस करती थी। हर कार्यक्रम में मेरा नृत्य होता। शादी -बच्चे होने के बाद ,यह कैसे संभव है बताइये ?" मैंने तो अभी नृत्य करना छोड़ दिया है। लेकिन मैं अपनी बेटी को एक बड़ा कलाकार बनाउंगी। "

ऐसा कहती हुई वह अपनी पांच वर्षीय बेटी को गॉड में लेकर उसका सिर सहलाने लगी।

"आपने जिस तरह नाचना छोड़ दिया उसी तरह इसने भी एक बच्चा होने के बाद छोड़ दिया तो **--? "** चुप रहने के बजाय मेरे मुंह से यह बात निकल गयी।एक पल के लिए जैसे उसे झटका लगा फिर दूसरे ही पल वह संभल गयी।

" आप भी सही हैं। बच्चों की कोई चिंता नहीं। आप पेंटिंग करते हुए सम्मान के साथ बड़े आराम से हैं। **"**

ये सब सुनने पर मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। मुझे लगा कि हम अपने सपनों का भार बच्चों के कन्धों पर डाल देते हैं। अपनी अधूरी इछाओ को सच करने ,अपने खली समय को भरने का जरिया इन बचो को बनाते है। हमारी भावनाओ को हम मज़बूरी के कारन मन में दबा लेते है।

फिर मेरी प्रिय सखी सुधा को बचा होने के एक साल के भीतर गर्भ पात की वजह से डेढ़ महीना छुट्टी डालना पड़ा **,** जिसे सुन मुझे आश्चर्य हुआ। उसे किसी परिचित डॉक्टर ने कहा था की यदि यह बचा गर्भ में रहा तो दोनों की जान खतरे में है। इस बात से दिग्भ्रमित होकर उसने गर्भपात कराया। जहा तक में सुधा को जानती हु वह अध्यात्म आदि में विश्वास करने वाली लड़की थी. "सुधा क्या तुम भी ऐसा कर सकती हो **?"**दुखी होकर मेने पूछा तो उसने कहा "जब तुम्हे बचा होगा तब तुम्हे पता चलेगा। **..... "**

उस रात को में बहुत देर तक बिस्तर पर करवट बदलती रही। बच्चा। **.....** बच्चा। **.....** राजी ने लिखना छोड़ा। बच्चे के कारण ,सुधा ने झूठमूठ की छुट्टी डाली उसके लिए भी बच्चा ही कारन **,** विमला हफ्ते में तीन दिन हस्ताक्षर कर बारह बजे ही घर भगति उसके लिए भी बच्चा ही कारण **.....** अंत में ये लोग ऐसा नाटक करते है की मेरी साधनाओ के लिए मेरा बाँझपन ही कारन हो **!**

हाल में कुछ दिनों से में में न रही। अंदर ही अंदर कुछ व्याकुलता थी। यदि कोई भी बात करता तो मुझे उसमे व्यंग्य का अनुभव होता। उन लोगो ने कभी यह नहीं सोचा की उनकी बातो से मेरे मन को कितनी चोट पहुंचेगी। शादी के बाद बच्चा न होने पर तो इन लोगो ने मुझे अपराधी के कटघरे में लेकर खड़ा कर दिया। सब मुझ पर एक अधूरी स्त्री के रूप दया दिखा रहे थे। यदि में किसी बच्चे को लाड प्यार करती तो वे उस बच्चे को नज़र लगेगी बोलकर चीन लेते और झाड़ू तीली लेकर सर पर दोनों हाथो से नज़र उतारते। कैसी अजीब है ये दुनिया **!** हाथ पेअर को कुछ हुआ तो उसे दिखने में शर्माते नहीं ,वे किसी को क्या तकलीफ **!** यह कैसे इतने व्यंग्य का कारण बन सकता है **?**

सुबह दस बजे तक भी मुझे बिस्तर पर पड़े देख रमेश मेरे पास आया। मेरा माथा छूकर धीरे से पूछा **-**

' तुम्हारी तबियत तो ठीक है न। **'**

'हाँ **' .....** उदासी से मेने कहा।

"क्यों उठने का मन नहीं है **?"** दिल्ली के कला **-**मेला में क्या जाना नहीं है **?**

'रमेश , मेरा मूड नहीं है ' बिस्तर पर करवट बदलते हुए कहा। शशि में कुछ दिनों से देख रहा हु तुम बहुत ही कमज़ोर लग आरहे हो। तुम हमेशा किसी न किसी से लड़ने को तैयार हो जाती हो। कोई किसी के लिए कुछ भी बोलता है तो तुम अपने ऊपर लेलेती हो। बताओ , तुम्हे क्या हुआ है ?"

"मुझे एक बच्चा चाहिए। ..... "

"क्या बच्चो की तरह ज़िद्द लेकर बैठी हो।जब डाक्टर ने कहा था तब तुम्हे कभी बच्चे की इतनी ज़रूरत नहीं थी। "

" क्यों तुम्हे नहीं है ?" बड़ी क्रूरता से उससे ही पूछा। " जो हो नहीं सकता , उसके लिए सर खपाने से क्यमा फायदा। अगर बच्चा ही चाहिए तो गॉड ले लेते है। उसने बड़ी गंभीरता से कहा "ये सब झूठ है। हर आदमी को अपना बच्चा चाहिए नहीं तो अपना पुरुषत्व साबित करने के लिए तो अवश्य चाहिए। "

" होता होगा। पर तुम मुझे बाकि आदमियों के साथ मत जोड़ो। क्या हमें बच्चे की कमी इतनी खलती है ? अब जो नहीं हो सकता तुम उसके पीछे क्यों पड़ी हो ?शशि , अपने मन को नियंत्रण में रखो। किसी की बात को बेकार में मन से न लो। करीब नब्बे प्रतिशत स्त्रियां ही बच्चों को जन्म दे पाती हैं और देती भी हैं। तुम्हारी तरह कुंची से बच्चे को जन्म देने का सामर्थ्य कितने लोगों में है ,बताओ ?"

मैं धीरे से उसके कंधे से सटकर बोली -" सच बताओ ,क्या तुम्हे नहीं लगता कि अपना एक बच्चा होना चाहिए। क्या मैंने तुम्हे निराश किया है ?"

" पगली कहीं की ,हमारा कौन सा चंद्र वंश या सूर्य वंश है ?या फिर कोई रत्नजड़ित सिंहासन अपने उत्तराधिकारी के लिए इंतज़ार कर रहा है ? मेरी पूछो तो यदि तुमने ही अपने गर्भ में नौ मॉस धारण कर अपने बच्चे को जन्म दिया भी होता तो भी मैं उस दर्द से दूर ही रहूँगा। इस अर्थ में तो हर आदमी बाँझ ही है। मेरी नज़र में जब एक नर्स बच्चे को लेकर " ये आपका बच्चा है " कहती है और अनाथाश्रम में जाकर एक बच्चे को लेकर "यह मेरा है " कहने में मुझे कोई अंतर नज़र नहीं आता। तुम व्यर्थ ही पागलों की तरह सोच रही हो। अब केवल चार महीने ही बचे हैं। दिल्ली में होने वाले कला -मेला की तैयारी कर लो। उसके बाद चाहे तो एक बच्चा गोद ले लेंगे। मातृत्व के लिए गर्भ धारण करना और जन्म देना ज़रूरी नहीं। मैंने एक अविश्वास भरी नज़र से उसे देखा। सभी पुरुष ऐसे नहीं होते। शायद मेरे बांझपन के साथ भगवान् ने मुझे रमेश जैसा जीवन साथी इसीलिए दिया है। मुझे अपनी मानसिक दुर्बलता के लिए शर्माने की ज़रुरत नहीं। मैंने मन बना लिया कि अब मुझे जीतना ही है।

मेरा मन दृढ़ हुआ। मैंने अपनी पगलाती सोच को रोका और अपनी चिंताओं को झाड़ दिया। दर्पण के सामने खड़े होकर जब में अपनी कुंची में रंग भरकर ,नए भावों के साथ चित्र बनाती हूँ तब मुझे मेरे स्त्रीत्व में कोई

कमी नज़र नहीं आती। सभी चिंताओं को कोना कर बीते हुए कल को मरा मान , बड़े उत्साह से में आनेवाले कल की और मुड़ी।

दिल्ली के कला -मेला में मेरी मुलाकात बड़ौदा की कलाकार अदिति गुप्ता से हुई। इधर -उधर की बातें करते -करते उसने पूछा -

"आपके कितने बच्चे हैं ?" ओह ,फिर वही प्रश्न !

" नहीं ,मैंने कहा। मेरे स्वर की निराशा को उसने भांप लिया।

" आपको चाहिए क्या ?" उसने पूछा। मैं एक पल के लिए उसे देखती रही। " कभी लगा नहीं। लेकिन एक करने का उद्देश्य थे। इस सृष्टि के बारे में मैंने भी लोगों से सुना है। मुझे भी कुतूहल हुआ। यह अनुभव कैसा होगा ,इस बात का कौतुहल ---"

" सच बताऊँ शशि " अदिति हंसती हुई बोली।

"क्या ?"

" चित्र बनाना ,कहानी रचना ,किसी भी सृजनशील क्रिया को करना बच्चा जन्म देने के सामान ही है। वैसे मेरी गर्भावस्था में मुझे किसी सृजनात्मक प्रक्रिया का अनुभव नहीं हुआ। अच्छी तरह से खाना छोड़कर मैंने उस वक्त किया ही क्या है ?एक बच्चे को पाल - पोसकर बड़ा करना एक बड़ा काम है ,यह में मानती हूँ। लेकिन हमारे यहाँ बच्चे का जन्म ही अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। उसे तुम किस प्रकार पालोगे ,यह पूछने वाला कौन है ?" मैं चुपचाप सुनती रही , फिर अदिति ने ज़ोर से कहा।

" शशि अधिकांश स्त्रियां अपने जीवन में कोई भी क्रियाशील कार्य अपने हाथों में नहीं लेती , सिर्फ घर -पति -झाड़ू -पोंछा में बिना किसी बदलाव के जीती है और उनके जीवन में बच्चा ही एक अद्भुत सृष्टि होती है। लेकिन मुझे और तुम्हे इन कारणों से बच्चा तो नहीं चाहिए , छोडो। मैं तुम्हे और एक बात बताऊँ ?" उसने पूछा -

"बताओं ,मैंने कहा। "

यदि तुम सचमुच बच्चों से प्यार करती हो तो उसमें क्या तेरा ,क्या मेरा ? मदर टेरेसा से बढ़कर और कोई माँ हो सकती है क्या ? वह बोलीं। हाँ ,मुझे यह समझ में आ गया। लेकिन मस्तिष्क के तर्क को मन कहाँ मानता है ? कहाँ तक समझ पाटा है ? मन हमेशा सत्य से मुंह मोड़ लेता है। एक क्षण की भावुकता में सभी तर्क मंद पद जाते हैं। अदिति ने मातृत्व की जो परिभाषा दी है उसका मुझे कभी अनुभव ही नहीं हुआ। यह बाकि औरतों को समझ आएगा या नहीं ,मुझे नहीं पता। सामाजिक परम्पराओं की मान्यताओं में स्त्रीत्व की

सार्थकता ,मातृत्व में ही समझी जाती है। विजि की शादी के पहले महीने जब उसकी माहवारी रुकी थी तब वह कितनी चिंतित थी। डॉक्टर के पास जाकर उसने निकलवाना भी चाहा। पहला गर्भधारण निकलवाना ठीक नहीं। यह तर्क सुन -सुन कर उसने उसे धारण भी किया और जाना भी। उसके बाद तो उसने मुझे भी उपदेश दिया। पड़ोस की शीला ने तो इस सन्दर्भ में कुछ भी नहीं सोचा। शादी के बाद बच्चा अनिवार्य है ,यह उसने स्वीकार कर लिया था। एक के बाद एक जानकर दो बच्चों के होने के बाद ऑपरेशन करवाकर वह निश्चिन्त हो गयी। उसकी बहन तो तीन के बाद भी जनती जा रही है। तीनों लड़कियां जो है ? यदि मातृत्व ही महत्वपूर्ण है तो बेटे की इतनी इच्छा क्यों ?इस सामाजिक वातावरण की ज़रूरतों को पूरा करने में हम जी -जान लड़ा देते हैं। सबकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने की कोशिश करते हैं लेकिन क्या इसकी ज़रुरत है ?

मैं किस कारण छटपटा रही हूँ ? ये बच्चा ,सास के कटाक्ष ,साथियों की अनुकम्पा ,भाभी के तीखे व्यंग्य का क्षणिक उत्तर मात्र है ?मेरे जनन की क्षमता और इनके पुरुषत्व को जगजाहिर करने का क्या यह एक ही रास्ता है ?समाज की इसी मांग को पूरा करने में संसार के न जाने कितने लोग बच्चों के लिए लालायित हैं ? यदि बच्चा ही महत्वपूर्ण है तो रमेश ने जो गोद लेने की बात की है वह क्यों नहीं हो सकता ?

मैं जनूं या न जनूं ,मेरा जीवन तो खाली नहीं होगा। मैंने जिस चित्र को बोया ,सींचा वो एक नहीं , दो नहीं। इस कला ने मेरे जीवन रुपी बच्चों को कितना रंगीन बनाया है ?यहाँ नीरसता नहीं है ,यांत्रिकता नहीं , मेरे जीवन की सार्थकता को मेरे बच्चों में ढूंढने की आवश्यकता ही नहीं। क्या मैं सचमुच बाँझ हूँ ?मेरे शारीरिक बांझपन को कोई तो समझे , इससे परे का बौद्धिक बांझपन मेरी समझ से परे है।

दिल्ली से लौटकर मैं पूरी तरह बदल गयी। पंद्रह दिनों तक लगातार कलाकारों के सान्निध्य में रही। कुंची पर लगे रंगों ने मुझे एक नयी दुनिया दिखा दी। मेरे उत्साह को देखकर रमेश भी चकित रह गया। "क्या है , तुम बहुत खुश नज़र आ रही ?एक अविश्वास के साथ पूछा। मैंने उत्तर नहीं दिया। सिर्फ हंस दी। मेरी हंसी में संतोष था। एक आत्मविश्वास था।

सोमवार का दिन था। उस दिन रमेश सुबह आठ बजे हींनिकल गया था। मैं कुंची की दुनिया में खो गयी। रश्मि को गोद में ले विजि ने दरवाजा खटखटाया। मेरे शरीर पर लगे रंग को देखकर वह बोली -

" ओह ,तुम पेंटिंग कर रही हो ?" बड़ी उदासीनता से पूछा।

" हाँ ,परसों के दिल्ली कला -मेला में ----उत्साह से बताने लगी। उसने उबासी ली। मैं हंस दी। मैं इसके सामने क्यों ये सब बताने जा रही हूँ ? हम दोनों की साधना के रंग ही अलग है। रश्मि ने मेरे गीले कैनवास पर तभी अपने छोटे हाथों को रखा। घबराकर -

"ओ बेटा ,उसे छुओ मत ," कहती हुई उसे उठाकर बड़ी ज़ोर से " छ " चिल्लाते हुए उसे रसोई की और ले गयी। डिब्बे से बिस्कुट निकलकर उसके हाथों में दिया। बच्चों का चिल्लाना ,शैतानी करना यह सब सामान्य बात है ,बड़ी निर्लक्ष्यता से कहती हुई विजि यहाँ -वहां और सास -ननद की बातें करते -करते आधा घंटा बैठी रही।

"अरे ! दीदी ,क्यों नहीं तुम किसी डॉक्टर को दिखती ?अब सात महीने गर्भधारण किये विजि की बातें सुन मुझे ज़रा भी संकोच नहीं हुआ। अपने हाथ की कुंची को यहाँ -वहां घुमाते हुए मैंने कहा -

" दिखाया है मैंने , विजि। "

" हाँ ---क्या बोले ? बड़ी उत्सुकता से उसने मुँह खोला।

" मुझमें बच्चा होने की उम्मीद काम है " बिना किसी आतुरता के मैंने बडे समाधान से बताया।

" वो कौन सा डॉक्टर है ? जिसने ऐसा कहा ? तुम्हारी कुंडली मैंने तीन -चार लोगों को दिखाया है। सबने कहा है -तुम्हे एक नहीं ,दो -दो होंगे। मैंने तुम्हे कितनी बार नाग -प्रतिष्ठा करने को भी कहा है ,मैं हंस दी।

"नहीं ,विजि ,मैं और रमेश एक बच्चा गोद लेना चाहते हैं। "

"किसी का बच्चा क्या हमारा हो सकता है ?"

"हमारे बच्चे का हमारा होना क्या गारंटी है ?"उसके हर प्रश्न पर मैंने भी एक प्रश्न रखा और उत्तर भी दिया।

"विजि ,राजू ने क्या किया ,तुमने नहीं देखा ?दोनों बच्चों ने गुंडागर्दी करते हुए जुआ खेलकर घर - ज़मीन बेचा और उनका रस्ते पर आना।, क्या तुमने नहीं

देखा ?"

" सभी बच्चे ऐसा क्यों करेंगे ?"

" विजि ,मैं अपने बच्चे को भविष्य की संपत्ति के रूप में नहीं पालूंगी। पिंड दान कार्य करने के लिए भी नहीं और वंशोद्धार के लिए भी नहीं। उस अनुभव मात्र के लिए। एक जीव को पाल -पोसकर बड़ा करने का मीठा अनुभव प्राप्त करने के लिए मात्र। यह अनुभव मुझे एक कलाकार के रूप में भी विक्सित कर सकता है। इस बात का मुझे भरोसा है। मेरे रंगोंकी दुनिया में आँखों को आश्चर्य चकित और हर्षित करने के लिए --वो भी जब मुझे इस अनुभव की आवश्यकता होगी तब--"जब मैं ऐसा कह रही थी तब रश्मि बिस्कुट ज़मीन पर फेंककर फिर कैनवास के पास रखे रंगों में अपने हाथ डुबो रही थी। " छुटकी ---छुटकी बोलते हुए मैं उसकी

और दौड़ी। विजि को आराम से बैठा देख एक पल के लिए मुझे बहुत गुस्सा आया लेकिन दबा लिया। " ऐसे छूटे नहीं --बिटिया ?" लो ,मैं तुम्हे दूसरा कागज़ देती हूँ ,इधर आओ ,मैंने बड़ी सहनशीलता से समझाया। रश्मि -हो हो करके चिल्लाने लगी।

" अब यह मुँह बंद नहीं करेगी ,दीदी ,मैं ही आती हूँ। इनके भाई के बच्चे के नामकरण समारोह के लिए निमंत्रण देने आयी थी ",इतना कहकर वह चल दी।

सात महीने का गर्भ रखकर तीन वर्ष की रश्मि को घसीटते हुए जब तक उसने रास्ता पार नहीं किया।,मैं कड़ी होकर देखती रही। "

फिर बहुत देर बाद अंदर आकर कैनवास के सामने बैठी। रश्मि ने कैनवास के निचले भाग में सब रंग मिलकर खराब कर दिया था। उसने जिन रंगों को मिला दिया था उसे सही करने के लिए कुंची लेकर काफी देर तक खड़ी रही।

विजि के सात महीने का पेट मेरी आँखों के सामने था। चाहे -अनचाहे कई रंग एक -दुसरे से मिले हुए थे। वह नौ महीने तक एक नए रूप में विकसित हुआ। बाद में सभी दैहिक क्रिया और प्रक्रिया भावों के साथ मिल जुलकर मनपूर्वक गर्भ धारण करता है। रंगीन रूप में उसका प्रसव होता है। यह हित -यातना मेरे भीतर -बाहर की भावनाओं का अनुभव क्या प्रसव से कम है ?

विजि ने उस दिन पुछा था -"क्या तुम्हे मातृत्व का सूंदर अनुभव नहीं चाहिए ?"

"लेकिन मैंने तो मानव जीवन के सभी अनुभवों की अनुभूति की है !"

" सात महीने के गर्भ के भीतर विनयपूर्वक छोटे बच्चे का लुढ़कना ,आगे बढ़ना---।"

"जीवन के सभी अनुभवों को प्राप्त करना क्या संभव है ?" कोई भी अनुभव अनिवार्य नहीं। विजि ने पी यू सी को चक्कर डालकर शादी की और खाना -पीना -सोना ,खाना -पीना -सोना इसी चक्र में आराम से कई वर्ष बिता दिए। क्या जीवन इतना विशाल है कि सबको सभी अनुभव प्राप्त हो जाता है ?"

फिर सभी विचारों कॉपर रखकर रश्मि के छोटे हाथों के निशाँ छिपाने लगी। बाहर शाम की ठंडी हवा के बीच कैनवास पर लाल सूर्य बड़ा होते -होते नीचे उतरने लगा।

****